10

कविता बोध में शब्दावली और संवेदीय अनुभव

टीना कुमारी*

समान अर्थ वाले शब्दों का अलग-अलग संदर्भों में प्रयोग क्यों किया जाता है? संदर्भ के अनुसार सटीक शब्द-चयन से अर्थ ग्रहण में कैसा प्रभाव पड़ता है और शब्दावली के स्तर पर सूक्ष्म समझ कै से विकसित हो इत्यादि प्रश्न भाषा सीखने-सिखाने वालों के लिए आवश्यक प्रश्न हैं। कविता पढ़ते व समझते समय ये प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि कविता में गद्य की तरह वर्णन नहीं होता, अपितु भावों का तीव्र प्रवाह होता है। इसके साथ ही कविता की संरचना 'संक्षिप्तता' को धारण करती है। इसलिए शब्दावली अधिगम का महत्व समझने के लिए काव्य का संदर्भ लेना एक अच्छा विकल्प है। कविता में प्रयुक्त एक ही या एक जैसे अर्थ वाले शब्दों से पाठक अलग-अलग भाव महसूस करते हैं और आनंद और अर्थ के विविध स्तरों पर विचरते हैं। शब्दावली की दृष्टि से देखें तो बारिश या बरसात या वर्षा जहाँ एक ही बात के लिए अलग-अलग शब्द दिखते हैं, किंतु प्रत्येक शब्द में निहित विशिष्ट अर्थ, संदर्भ विशेष में उसके चुने जाने का आधार बनता है। यह पाठकों द्वारा अलग-अलग भाव व अर्थ ग्रहण किए जाने का एक कारण भी है। बच्चों के साथ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जुड़े लोगों के लिए के लिए यह विषय उपयोगी है, क्योंकि कविता की व्याख्या शब्दों के किसी एक नियत अर्थ को जानने पर निर्भर न होकर, अलग-अलग संदर्भों के अनुभव और शब्दों की सूक्ष्म समझ से जुड़ी है। अत: कविता पढ़ते व समझते समय उसमें प्रयुक्त शब्दावली को संदर्भ के अनुसार समझना, संवेदीय अनुभव और शब्दावली सूक्ष्मता का संबंध और प्राथमिक कक्षाओं में शब्दावली शिक्षण के विभिन्न तरीकों को जानना इस लेख के मुख्य बिंदु हैं।

अगर सार्थक शब्द न हो तो मानव मन के समस्त भाव मन में ही विलीन हो जाएँ। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार काव्य अथवा साहित्य की साधना वस्तुत: शब्दार्थ साधना ही है। शब्द की महत्ता पर कबीर ने कहा है—

> "एक शब्द सुखरास है एक शब्द दु:खरास
> एक शब्द बंधन कटे एक शब्द गलफाँस।"
>
> (राज और कुमार,2006)

शब्दों और उनके अर्थ गहराई से जुड़े हुए हैं तथा अर्थ ग्रहण की विविधता में संदर्भों का भी विशेष महत्व है। एक शब्द भी अलग-अलग संदर्भ के अनुसार नये अर्थों का संकेत करता है। काव्य की संक्षिप्तता में पिरोये शब्दों से तो बहुत से भिन्न अर्थ लिए जा सकते हैं। व्यावहारिक समझ के स्तर से देखें तो अलग-अलग पाठक के लिए एक ही कविता में निहित सुंदरता और अर्थ की कोटि भिन्न हो सकती

*शोधार्थी (पी.एच.डी.), शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

है जिसमें शब्दों से मिलने वाले भाव और अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका है। उदाहरण के लिए, उपेन्द्र कुमार रचित कविता 'हवा ,पानी और धूप' की इन पंक्तियों को देखें—

"हवा चले तो गुनगुनाती हुई
धूप पसरे तो उम्मीदें जगाती हुई
और पानी की धार मन को गुदगुदाती हुई।"

(कुमार, 2014)

उपर्युक्त कविता की पंक्तियों में 'हवा का गुनगुनाना और धूप का पसरना' में शब्दों को देखें तो हवा की बजाय वायु हो सकता है। पर्यायवाची का प्रयोग है किंतु दोनों का भाव अलग-अलग है। 'हवा गा नहीं रही', 'गुनगुना रही है' और 'धूप पसर रही है।' इन शब्दों का प्रयोग संकेत करता है कि लिखने वाले ने गाने और गुनगुनाने के भावों को महसूस करते हुए यहाँ गुनगुनाना डाला है। पसरने के अर्थ में भाव की भिन्नता है जो कहने वाले के भाव में बसी है। यह शब्दावली मोटे और बाह्य शब्दों से परे भाव के अलग स्तर पर ले जाती है और जानने वाला यदि वाकई में इन्हें महसूस कर चुका है तो वह इस भाव तक पहुँचेगा भी। यहाँ भाषा और महसूस करने की क्षमता का संबंध जुड़ता है। "भाषा न केवल संप्रेषण का माध्यम है अपितु सोचने, कल्पना करने, महसूस करने का साधन भी है।" (कुमार, 2000)। शब्दों के बिना महसूस करने को जानना और सोचना संभव नही है। क्या हम कभी कुछ ऐसा भाव या विचार ला सके हैं जो शब्दों की परिधि से परे हो? जागृत और स्वप्न की दशा में भी बिना शब्द कुछ भी संभव नहीं है। शब्द महसूस करने का साधन है और महसूस कर पाने में प्रत्यक्ष अनुभव महत्वपूर्ण है। कविता भावों के धरातल पर पनपती है और शब्दों की सूक्ष्म समझ भावों की सटीक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। अत: प्रत्यक्ष निजी अनुभव से जोड़कर बार-बार कविता सुनना-पढ़ना और कविता के शब्दों की व्याख्या करना बच्चों के लिए प्रवाहपूर्ण भाषा प्रयोग और रसास्वादन की दृष्टि से रोचक रहता है इसलिए शब्दावली विकास में कविता को एक युक्ति के रूप में भी देख सकते है।

अर्थ के घटक और अर्थ ग्रहण

भाषा विज्ञान के अंतर्गत शब्द विज्ञान का मुख्य काम भाषायी श्रेणियों की पहचान करना, उन्हें उपयुक्त शब्दावली में व्याख्यायित करना और अर्थ ग्रहण का अंतर लाने में भाषा कैसे काम करती है, को समझना है। शब्दों से वाक्य और वाक्यों से रचना निकलती है और एक ही रचना के विभिन्न अर्थ भी निकलते हैं।

अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया होने के संबंध में कई मत हैं, जैसे— बार-बार बोले जाते रहने से अर्थ का स्मरण होना, अर्थ का बोध अनुमान से होना, परस्पर संबंध से अर्थ ग्रहण, शब्द से स्वतः अर्थ निकलता है, वाक्य के पदों से उपस्थित होने वाले अर्थों का वक्ता तथा श्रोता की समान मनोदशा द्वारा ग्रहण। इन मतों में अर्थ का ग्रहण किया जाना, संदर्भ, स्मृति और अभ्यास पर निर्भर दिखाई पड़ता है। अधिकतर स्थितियों में अर्थ लेने में निश्चयात्मक बोध की बजाए संभावनात्मक बोध के कारण अर्थ ले पाने की बात कही जाती है। अर्थ ग्रहण में निश्चयात्मकता न होने के कारण समझे गए अर्थ में विविधता आती है और जो अर्थ न भी पता हो संदर्भ और अनुमान द्वारा उसे भी ग्रहण कर पाते हैं। इसी बात को भाषा के संरचनात्मक स्तर और प्रयोक्ता के मानसिक स्तर की दृष्टि से भी

समझना आवश्यक है। भाषा के ढाँचे में शब्द और अर्थ के आधारभूत घटक हैं तथा यादृच्छिकता की मूल संकल्पना है। भाषा संप्रेषण की प्रक्रिया में मनुष्य के मस्तिष्क, वाक्, श्रवण इंद्रियों की रचना और परस्पर अंतरक्रियाओं का समावेश होता है। केवल मानसिक घटना या कुछ चिह्न प्रतीक (दृष्ट या श्रव्य) अलग-अलग कोई अर्थ प्रतिपादित नहीं कर सकते। अर्थ इन भाषायी-पदों, हमारी मानसिक क्रियाओं और विभिन्न प्रकार के विषयों (गुण, संबंधों इत्यादि) के परस्पर निश्चित सह-संबंध और सूत्रीकरण द्वारा अभिव्यक्त एवं रेखांकित करने से उपजता है। अर्थ जहाँ मानसिक घटना के आयामों को समेटता है, वहीं उसे सूचित कर सकने योग्य मानसिक क्रिया और विशिष्ट पद से भी जोड़ता है। शब्द व उसका प्रयोग उचित स्पष्ट व निर्विवाद हो, अर्थ ही वह कड़ी है जो ऐसी अंतर्कोटीय संयोजना को स्पष्ट करती है। अर्थवत्ता, सार्थकता पद कारण पर आश्रित अर्थ अवधारणा की पर्याय है जबकि अभिप्राय व तात्पर्य वक्ता अथवा लेखक की मानसिक क्रिया या चिंतन क्रिया की वाहक लगती है।

संप्रेषण के दौरान केवल ध्वनि रूप में शब्द उच्चारण और उसके श्रवण से अर्थ निर्माण संभव नहीं हैं। अर्थ सदैव किसी दिखाई देने वाली वस्तु को इंगित कर पाने की क्रिया नहीं हैं। केवल किसी बाह्य पदार्थ या घटना से मिलकर अर्थ बनता है ऐसा भी नहीं है। संप्रेषण में हम बहुत सी अमूर्त बातें भी करते हैं जो किसी बाह्य वस्तु या घटना से जुड़ी हों ऐसा आवश्यक नहीं है और जिन शब्दों को हम भाषा का घटक मानते हैं वे तो स्वयं ही भाषा के यादृच्छिक होने के गुण से आबद्ध हैं। संप्रेषण की क्रिया में उच्चारण द्वारा ध्वनि रूप में वर्णों और उनसे बने शब्दों को प्रकट रूप में लाया जाता है। किंतु ऐसा होने के पूर्व वक्ता के भीतर कुछ अभिव्यक्त करने की इच्छा, अभिव्यक्त किए जाने वाले विशिष्ट भाव (अर्थ का मूल बिंदु) को शब्दों के रूप में ले आती है और इसी समय से शब्द में इच्छित अर्थ निहित रहता है। श्रवण की प्रक्रिया में श्रोता द्वारा ध्वनि को निर्धारित लिखित प्रतीक चिह्न से मानसिक क्रिया द्वारा जोड़ा जाता है। जिस संदर्भ में बात की जा रही है उससे संबंधित अनुभव के आधार पर *डीकोडिंग* होती है तो ऐसे में यदि उस संदर्भ का अनुभव न हो तो उससे संबंधित शब्द की व्याख्या अधूरी रह जाने की संभावना बनी रहती है। अर्थ ग्रहण की क्रिया में अंततः वक्ता के भावनात्मक धरातल का भी *सेंस* लेते हुए बात को समझा जाता है। ये सभी क्रिया इतनी तीव्रता से होती हैं कि सामान्यत: हम इन्हें होने के क्रम में देख नहीं पाते। अधिकतर यह भी पाया जाता है कि वक्ता की पूरी *इंटेंशन* पर पर्याप्त ध्यान न देने और संदर्भ से प्राथमिक स्तर का संबंध (सीधा अनुभव न होना) न हो तो अर्थ की समझ अधूरी ही रह जाती है। अर्थ के घटक कई जटिल क्रियाओं से जुड़े हुए हैं। इसलिए अर्थ ग्रहण के संबंध में प्राथमिक संवेदीय अनुभव, संदर्भ विशेष के आधार पर शब्द की समझ होना आवश्यक है।

पर्यायवाची शब्द प्रयोग, संदर्भ का महत्व और संवेदीय अनुभव

शब्दों का उपयोग करते समय वे क्या अर्थ दे रहे हैं? इसमें संदर्भ बहुत महत्व रखता है। उदाहरण के लिए, 'पानी-पीना', 'जल चढ़ाना' दोनों में एक ही पदार्थ के प्रयोग के अलग संदर्भ और मान्यता के कारण भिन्न-भिन्न पर्यायवाची लिए गए हैं। संदर्भ के अनुसार शब्द-चयन होता है। किसी शब्द के साथ जो मान्यता

या भाव है वह संदर्भ के अनुसार उसे अन्य शब्दों से अलग करता है। इस तरह पानी पीने वाले मिट्टी के बर्तन को 'घड़ा' और पूजा के समय उसी बर्तन को 'कलश' कहा जाता है। यह स्पष्ट उदाहरण है जहाँ पदार्थ तो एक है और संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न नाम या शब्द दिए गए हैं तो सोचने वाली बात यह है कि समता पदार्थ की है, उपयोग की या मूल कार्य की देखा जाए तो प्रयोग का मूल एक जैसा है किंतु एक नहीं है क्योंकि मान्यताओं का फ़र्क है। यहाँ अर्थ ग्रहण में प्रयोग के संदर्भ और उससे जुड़ी मान्यता ध्यान देने योग्य बिंदु हैं। पर्यायवाची शब्दों का उदाहरण लें तो भू, ज़मीन, धरा, वसुधा, वसुंधरा आदी भूमि के पर्याय के रूप में देखे जाते हैं किंतु क्या ये संभव है कि निम्नलिखित पंक्तियों में 'भूमि' के लिए प्रयुक्त शब्द को किसी और शब्द से बदल सकें?

'गूँजी वसुंधरा गूँजा आसमान,
दसों दिशा गूँज रहा, विश्व शांति गान।'
(मौखिक स्मृति पर आधारित स्रोत अज्ञात)

यदि यहाँ वसुंधरा की जगह ज़मीन या फिर भूमि रख दें तो भाव, प्रवाह, अर्थ यथावत रह सकेगा? निश्चित ही कुछ बदलाव होगा और जब कवि ने यह शब्द चुना होगा तो किसी भाव विशेष के संप्रेषण के लिए विशिष्टता से चयन किया होगा। इसी क्रम में यह भी जानना महत्वपूर्ण है कि किसी भी भाषा में शब्दावली विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा, उस भाषा के संदर्भ (स्थान विशेष की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खान-पान, रहन-सहन, व्यवसायों इत्यादि) से उपजता है, उसमें रचा-बसा होता है। वर्ष का अधिकतर समय शीत या हिम में बिताने वाले देशों में बर्फ़ के लिए अनेक शब्द हैं। बर्फ़ का होना उनके दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जबकि उष्ण जलवायु वाले क्षेत्र वालों के पास शब्द सीमित हैं। दरअसल हमारी जलवायु वाली स्थिति में बर्फ़ से जुड़े भाव, ज़रूरतें और उपयोग कम हैं इसलिए शब्द भी कम हैं। गर्मी वाले स्थान पर गर्मी से संबंधित शब्दावली का विकास अधिक होता है। संदर्भ विशेष में उपजी भाषा (शब्दावली) बातों को उनकी विशिष्टता (भाव व ज़रूरत की विविधता) के साथ संप्रेषित करने की क्षमता के साथ उपजती है। अतः पदार्थ, तत्व, घटना से संबंधित चीज़ों को बताने वाली शब्दावली में जीवन की घटनाओं से उपजे भाव शब्दों के अर्थ में निहित होते हैं और इसी में अर्थ को समझने की चाबी भी है। उदाहरण के लिए, अगर कभी बारिश की तीव्रता और अधिकता को देखा या अनुभव न किया हो तो मूसलाधार बारिश के अभिप्राय को समझना अपूर्ण है। दिल्ली या उत्तर प्रदेश की बारिश को जब हम भारी बारिश कहते हैं तो यह इसी अनुभव के संदर्भ से जुड़ी कोटि के आधार पर उत्पन्न हुआ है। मौसिनराम (चेरापूँजी) में होने वाली वर्षा और उस वातावरण के भाव और उस भाव के लिए उचित शब्द हमें नहीं पता क्योंकि वह सीधा हमारे अनुभव से नहीं जुड़े। हालाँकि अलग-अलग संदर्भों को टी.वी. इत्यादि माध्यमों से हम देख व सुन सकते हैं किंतु वह स्वयं में हमारा दैनिक अनुभव नहीं है। इसलिए इससे जुड़े शब्दों को विकास व विस्तार और उनका *इंटरप्रिटेशन* (व्याख्या) हमारे लिए चुनौतीपूर्ण होगा। मूसलाधार, रिमझिम, रुनझुन शब्दों को समझना और इनका उचित उपयोग; महसूस करने से संबंधित हैं। किसी अनुभव में कई परतें होती हैं, कक्षा में बैठकर इनके अर्थ को रटने की प्रक्रिया अधूरी ही है क्योंकि अर्थ की समझ शब्द की कोटि और भाव की सूक्ष्मता, बिना अनुभव अधूरी है। पर्यायवाची शब्दों के एक

अन्य उदाहरण से देखें तो पर्वत, शैल, अचल, भूधर शब्दों का प्रयोग स्थानांतरण के द्वारा संभव नहीं क्योंकि इनके अर्थ में कोटि और भाव की सूक्ष्मता में अंतर है। जहाँ अचल में दृढ़ता और जड़ता का बोध है, तो वहीं भूधर में भूमि को धारण करने वाला, तो शैल में चट्टान के गुण हैं, वहीं पर्वत में ऊँचाई का अर्थ है। यहाँ सभी का मूल भाव अलग है। इस शब्द के पर्याय स्वयं ही अभिप्राय की विशिष्टता में खड़े हैं जो पाठकजन्य भी हैं। फिर प्रश्न ये भी है कि जिसने पहाड़ खड़े किए हैं, जिसने देखे हैं और जिसने सुने हैं, तीनों के भाव में फ़र्क होगा।

उपरोक्त उल्लेखित बातों से यह बात निकल कर आती है कि यह शब्दों की जन्म स्थितियाँ उनमें रमी होती हैं प्रत्येक शब्द अपने अर्थ में विशिष्ट भाव कोटि के साथ है और पाठक *इंटरप्रिटेशन* (व्याख्या) उसके अनुभव विशेष से प्रभावित होता है।

रोसनब्लेट के अनुसार पठन में पाठक के अनुभव, व्याख्या व अर्थ निर्माण के जनक होते हैं। पढ़ने का अर्थ पाठ्य के साथ पाठक व्याख्या जुड़ने से निर्मित होता है। अनुभव जैसा और जितनी गहराई, जीवंतता वाला होगा उतना ही अर्थ ग्रहणता का स्तर होगा। अनुभव की महत्ता को गहराई में ले जाएँ तो संदर्भ में अनुभव जन्म लेगा और उसमें व्यक्तिगत भिन्नता स्वयं की व्याख्या को जन्म देगी। यदि अनुभव इतना ही आवश्यक है तो फिर अनुभव शब्दावली विस्तार के लिए भी आवश्यक है। अनुभव जो इंद्रियों द्वारा प्राप्त हो। ऐसा मान लिया गया है कि पढ़ने के दौरान कक्षा में केवल सुनने से ही अधिकतर अनुभव का जन्म हो जाएगा किंतु शब्दावली विकास में भाव और महसूस करने का जो मसला है वह सिर्फ़ सुनने से हल नहीं हो सकता। ऐसे अर्थ जो कहीं लिखे हैं या कहीं सुने हैं या उन्हें पढ़कर शब्दावली की सूक्ष्मता को नहीं समझा जा सकता है। भाव लेने का नहीं उपजने का विषय है। अतः कक्षा में भाषा को देखकर, छूकर, सुनकर, बोलकर, गाकर सुदृढ़ करने का काम होना चाहिए। भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को संवेदनात्मक स्तर से जोड़ने पर शब्दों की सटीक व्याख्या करने की क्षमता विकसित हो सकेगी और तभी बच्चे अर्थ निकालने के स्तर पर नई गहराइयों में जाने के लिए तैयार होंगे।

भाषा सीखने-सिखाने के संदर्भ में सिल्विया एश्टन वार्नर ने न्यूज़ीलैंड में माओरी बच्चों के साथ अपने काम के दौरान पाया कि बच्चे अपने भावों और संदर्भ से ही जुड़कर शब्दावली निर्माण और अधिगम में रुझान लेते गए। वहाँ के हिंसक व नकारात्मक वातावरण के अनुभवों से उपजी संवेदनाओं को कहने वाले शब्दों के साथ बच्चों ने पढ़ने-लिखने का आरंभ किया (थॉम्पसन, 2000)। यह शब्द-भंडार उनकी विविध व विस्तृत मानसिक अवधारणाओं और अनुभवों से जन्में। अनुभव कहने की ज़रूरत से ही शब्दावली का विकास हुआ। ऐसी प्रबल संभावनाएँ होतीं हैं कि संवेदीय और ऐंद्रिक अनुभवों से भाषा उपजे और विस्तृत हो। "भाषा जितनी बार संवेदना में डुबोई जाती है उतनी हल्की और क्षमताशील होती जाती है" (चतुर्वेदी, 1994)। भाषा शिक्षण में संवेदीय अनुभूति भाषा को सारगर्भित, सूक्ष्म और सुंदर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। इसी आधार पर प्राथमिक स्तर पर सिखाई जाने वाली भाषा में शब्दावली शिक्षण में यहाँ व्यावहारिक स्तर पर कुछ बिंदु प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।

प्राथमिक कक्षाओं में शब्दावली-विस्तार व भाव सूक्ष्मता हेतु सुझाव

- प्रत्येक बच्चे और उभरने वाले संदर्भ के साथ चर्चा करके विशिष्ट शब्दावली एकत्रित करना।
- पूर्व नियत अर्थ वाला शब्द न लेकर अपने भाव विशिष्ट का स्पष्टीकरण करना या अपने भाव को व्यक्त करना।
- यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव देना पहला काम है और दूसरा व्यक्तिगत भाव की अभिव्यक्ति।
- प्राकृतिक वातावरण और प्रकृतिक सूक्ष्मता का अनुभव व अवलोकन करना। बरसात में बादल की छवियों का अवलोकन, घास, पत्तों को छूकर महसूस करना, बारिश को हथेली पर महसूस करना, हरित वातावरण में भ्रमण, घास पर चलना, आँधी में पत्तों का शोर सुनना आदि।
- किसी विषय या मौसम से संबंधित शब्दावली एकत्रीकरण— गर्मी, सर्दी, बरसात, आँधी, खेल का मैदान आदि करना।
- पाठ्य पढ़ने-पढ़ाने के समय संबंधित अनुभव लाने, जैसे— चाँद या बारिश या खिलौनेवाला इत्यादि से संबंधित पाठ्य काव्य पढ़ते समय इनका अवलोकन, संबंधित अनुभवों का वर्णन और शब्दावली एकत्रीकरण करना आदि।
- आँखें बंद करके चीज़ों और पदार्थों, अपने बस्ते का सामान, घास इत्यादि को छूना और बताना कैसा लग रहा है?
- मौसम के अनुसार संबंधित पाठ्य पढ़ना-पढ़ाना।
- अलग-अलग तरह का संगीत सुनना।
- तस्वीरों को पढ़ना (बड़ी-बड़ी तस्वीरों को अवलोकन में लाना और फिर विभिन्न भावों या स्थितियों पर बात करना)।
- एक विषय या भाव से संबंधित अधिकाधिक कविताएँ पढ़ना।
- 2–3 भाषाओं के शब्द एकत्रित करना और उनका सही अर्थ खोजना।
- किसी भी विषय पर बात करते हुए सटीक से सटीक शब्दों के प्रयोग का लगातार प्रयास करना।

निष्कर्ष

संवेदीय अनुभवों के साथ कविता सुनना, अपना संबंधित अनुभव बताना और कविता की व्याख्या करना बच्चों के लिए बोध के साथ प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ना-सीखना और पढ़ने में रस ले पाने की दृष्टि से आवश्यक है। शब्दावली विकास और अर्थ सूक्ष्मता के लिए कविताओं को अधिकाधिक मात्रा में पढ़ना-सुनना मददगार साबित हो सकता है। छोटी व तुकबंदी वाली कविताएँ एक ही विषय पर अनेक कविताएँ सुनते, पढ़ते रहने से बच्चों के मस्तिष्क में शब्दों की छवियाँ बनती व विस्तृत होती रहती हैं। बच्चों के लिए छोटी-छोटी कविताएँ प्रभावी भी होती हैं, उन्हें वे स्मरण कर सकते हैं और बार-बार गा सकते हैं। साथ ही कविता में बहुत अधिक विस्तार न होने के कारण शब्द छवि को व्याख्या द्वारा समझते रहने के अवसर भी अधिक होते हैं। अतः शब्दावली को विस्तृत व सूक्ष्म करने के शैक्षिक उद्यम में संवेदीय अनुभव के महत्व का ध्यान रखते हुए हम शब्द-छवियों की बेहतर समझ वाले सजग पाठक तैयार कर सकते हैं।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 2000. *बच्चे की भाषा और अध्यापक*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.

कुमार, उपेन्द्र. 2014. http://new-kavita-kosh.blogspot.com/2014/03/ पर देखा गया।

गोयल, धर्मेन्द्र. 1991. *भाषा दर्शन*. हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़.

चतुर्वेदी, रामस्वरूप. 1991. *कविता का पक्ष*. लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली.

थॉम्पसन, नैन्सी. 2000. सिल्विया एश्टन वार्नर— रेकलाइमिंग पर्सनल मीनिंग इन लिटरेसी टीचिंग. *द इंग्लिश जर्नल*, 89(3). नेशनल काउन्सल ऑफ़ टीचर्स ऑफ़ इंग्लिश. पृ.सं. 90–96. वाशिंगटन डी.सी., अमेरिका.

मिश्र, विद्यानिवास व अन्य. 1976. *भारतीय भाषाशास्त्रीय चिंतन*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, राजस्थान.

राज, आचार्य बलदेव और डॉ. संजय कुमार. 2006. *शब्द-विवेक*. अनंग प्रकाशन, नयी दिल्ली.

रोसनब्लेट, लुईस एम. 2005. *मेकिंग मीनिंग विद् टेक्स्टस: सिलेकटिड एससेस*. पियर्सन एजुकेशन, कनाडा.

शर्मा, संतोष (संपादक). 2014. *शिक्षण और अधिगम की सृजनात्मक पद्धतियाँ*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.